तलवारबाज़ी

ईशा सरदेसाई द्वारा पुनर्लिखित

तलवारें हवा में लहरा रही थीं। वे जिन लोगों के हाथों में थीं, वे लोग बड़ी-ही सावधानी के साथ इन्हें चला रहे थे, उनके क़दमों में फुर्ती थी और उनकी पोशाकें उनके हर क़दम के साथ गोल घूम रही थीं। जिस हॉल में वे अभ्यास कर रहे थे उससे कुछ-ही दूरी पर नज़र आ रहा था, माउन्ट फूजी। उसकी शानदार सफ़ेद चोटी, नीचे बसे गाँवों में होने वाली हर हरक़त की गवाह थी।

एक युवक, शिरोहा जो लगभग बीस साल का था, आश्चर्यचिकत हो तलवारबाज़ों को देख रहा था। वह हमेशा से ही इस मार्शल आर्ट को सीखना चाहता था, परन्तु उसका परिवार इतना निर्धन था कि वह उसे इस शिक्षा के लिए नहीं भेज सका। उसका बहुत मन था कि काश वह भी इन लोगों के साथ वहाँ होता; तलवारबाज़ी में उन्हीं की तरह तेज़ और फुर्तीला।

तलवारबाज़ी की इस विशेष तकनीक को केन्डो कहा जाता था और यह जापान में पूजनीय थी। युद्ध से अधिक इसका उद्देश्य था, इसकी दीक्षा लेने वाले व्यक्तियों के चरित्र का विकास करना — उनमें अनुशासन, सम्मान एवं सत्यनिष्ठा के गुणों को पैदा करना। वास्तव में इन तलवारबाज़ों की चाल में कुछ ख़ास था — न केवल युद्ध करते समय, बल्कि आम तौर पर भी — ऐसा लगता था मानो वे अपने आस-पास की आबोहवा को ही बदल दे रहे हों। जब भी शिरोहा उनकी उपस्थिति में होता तो वह सीधा खड़ा हो जाता। उसका शरीर, उसका सम्पूर्ण अस्तित्व, सम्मान के साथ प्रतिक्रिया किए बिना नहीं रह पाता।

उस दिन दो-दो के समूह में कई विद्यार्थी तलवारबाज़ी का अभ्यास कर रहे थे। वे घण्टों से ऐसा कर रहे थे; सूरज की रौशनी में उनकी तलवारें चाँदी की तरह चमक रही थीं। अन्ततः सेन्सेई यानी शिक्षक ने उस हॉल में प्रवेश किया और वे सामने की ओर पहुँच गए। वे काफ़ी उम्रदराज़ व्यक्ति थे, उनका जबड़ा मज़बूत था और उनके बाल कहीं काले तो कहीं सफ़ेद थे।

“अब तुम लोग अपनी तलवारें नीचे रख सकते हो,” सेन्सेई ने घोषणा की। “आज के लिए इतना काफ़ी है।”

विद्यार्थी अपना सामान इकट्ठा कर रहे थे और तभी शिरोहा दौड़कर इन व्यक्ति के पास पहुँच गया।

शिरोहा ने कहा, “सेन्सेई, मैं आपसे तलवारबाज़ी सीखना चाहता हूँ।”

सेन्सेई ने उसकी ओर ध्यान से देखा। “तुम सीखोगे?” उन्होंने कहा।

“जी,” शिरोहा ने उत्तर दिया। “मेरे पास सीखने के लिए पैसे नहीं हैं, परन्तु यदि आप मुझे अपना शिष्य बना लें तो मैं बहुत, बहुत मेहनत करूँगा। आप देखिएगा।”

“अच्छा? तुम कितनी कड़ी मेहनत करने को तैयार हो? सेन्सेई ने अपनी भौहें चढ़ाते हुए पूछा।

“मैं कल से हर रोज़ आपकी कक्षा में आऊँगा।”

“शुरुआत करने के लिए यह अच्छा है,” सेन्सेई ने कहा। “यदि तुम इसी गति से सीखते रहे तो बीस साल बाद एक ठीकठाक तलवारबाज़ बन जाओगे।”

यह सुनकर शिरोहा दंग रह गया। उसे बीस साल तक सीखते रहना होगा? केवल एक *ठीकठाक* तलवारबाज़ बनने के लिए?

उसे तुरन्त-ही अपनी भूल का एहसास हो गया। “मैं और सीखूँगा!” उसने कहा। “मैं कक्षा से पहले और कक्षा के बाद भी सीखूँगा। मैं सुबह से लेकर रात तक सीखूँगा।”

सेन्सेई विचार करने लगे।

“तब तो तुम, तीस या चालीस साल बाद ही तलवार चला पाओगे।”

शिरोहा को कुछ समझ नहीं आ रहा था। अब उसे *चालीस* साल लगेंगे?

“मैं रात भर सीखूँगा!” उसने कहा।

“पचास साल,” सेन्सेई ने कहा।

“मैं कम बार खाना खाऊँगा। मैं अन्य सभी कार्य छोड़ दूँगा। मैं, केन्डो और सिर्फ़ केन्डो पर ही ध्यान दूँगा!”

“ओऽऽऽ,” सेन्सेई ने कहा, “अगर तुम ऐसा करोगे तो हो सकता है तुम अपने जीवन के अन्त तक निपुण हो जाओ। हाँ, पर इसकी कोई गारन्टी नहीं है। हो सकता है कि तब भी तुम्हें अपना शिष्यत्व समाप्त करने के लिए अपने अगले जन्म से कुछ वर्ष निकालने पड़ें।”

शिरोहा के पास बोलने के लिए शब्द ही नहीं थे।

अन्ततः उसने कहा, “कृपया मुझे बताइए कि तलवारबाज़ी सीखने के लिए मैं क्या कर सकता हूँ। आप जैसा कहेंगे, मैं वैसा ही करूँगा। जितना भी समय लगे, मैं प्रयास करूँगा।”

सेन्सेई मुस्कराए। “तो ठीक है,” उन्होंने कहा। “कल वापस आना, और हम वहाँ से शुरू करेंगे।”

तो अगली सुबह, सूरज निकलते ही, शिरोहा वापस आ गया। उसने इस अवसर के लिए नए कपड़े पहने थे। *मैं आज कौन-से दांव सीखूँगा?* कौतुक से भरा, वह ऐसा सोच रहा था। *कौन-सी चालें, तलवार के कौन-से वार?*

हॉल के पास पहुँचते समय भी वह इसी सोच में डूबा था, उसके चहरे पर खोई-खोई सी एक मुस्कान थी। मगर जब वह नज़दीक पहुँचा तो उसे एहसास हुआ — वहाँ तो कोई भी नहीं था!

शिरोहा घबराकर चारों ओर देखने लगा। “सेन्सेई?” उसने पुकारा। “क्या आप यहाँ हैं?”

सेन्सेई हॉल से लगे एक छोटे-से घर में रहा करते थे। सेन्सेई को पुकारते समय शिरोहा को घर के अन्दर से आती एक आवाज़ सुनाई दी। एक क्षण बाद, सेन्सेई का एक सेवक तेज़ी-से बाहर आया; उसके हाथ में एक झाड़ू और एक पोछा था।

“शिरोहा?” सेवक ने कहा। “ये लो।” उसने शिरोहा के हाथ में झाड़ू और पोछा थमा दिया। “सेन्सेई ने तुम्हें ये देने के लिए कहा है।”

शिरोहा हैरान होकर झाड़ू-पोछे की ओर देखने लगा। “मैं इनका क्या करूँ?” उसने कहा।

“क्या मतलब है तुम्हारा?” सेवक ने उत्तर दिया। “तुम्हें इस हॉल को साफ़ करना है।”

“परन्तु— ज़रूर कोई गलती हुई है। मैं यहाँ सफ़ाई करने नहीं आया हूँ। मैं यहाँ केन्डो सीखने आया हूँ!”

“सेन्सेई जी ऐसी गलतियाँ नहीं करते,” सेवक ने कहा। “अब, अगर मैं तुम्हारी जगह होता तो सफ़ाई में जुट जाता। जल्द-ही लोग अभ्यास करने आते होंगे।”

सेवक चला गया और शिरोहा एकटक उसे देखता रहा, उसके हाथों में वह झाड़ू और पोछा लटक रहा था। आख़िरकार उसने ज़मीन की ओर देखा जहाँ थोड़ी धूल इकट्ठा हो गई थी। उसने एक गहरी साँस ली और अपना काम शुरू कर दिया।

लगभग एक घण्टे तक वह सफ़ाई करता रहा; उसका चहरा उतर गया और वह बेमन-से धीरे-धीरे झाड़ू लगा रहा था। और फिर अचानक — *खचाक!*

“सुनो!” उन्होंने कहा।

उसने घूमकर देखा तो उसके गुरु शान्त भाव से उसकी ओर देखकर मुस्करा रहे थे।

“सेन्सेई!” शिरोहा ने अचम्भित होते हुए कहा। सेन्सेई के हाथ में एक पतली-सी लकड़ी की तलवार थी। “क्या — क्या आपने अभी-अभी मुझे मारा?”

“हाँ, क्यों, मैंने ही मारा,” सेन्सेई ने कहा।

“पर — क्यों?” शिरोहा ने पूछा। “मैं हॉल की सफ़ाई कर रहा हूँ, जैसा कि आपने कहा था।”

“हाँ, तुम कर रहे हो,” सेन्सेई ने कहा। “पर इसका यह मतलब नहीं है कि तुम्हें तैयार नहीं रहना चाहिए।”

एक बार फिर शिरोहा के पास शब्द नहीं थे।

“ठीक है, मुझे इस तरह देखते मत रहो,” सेन्सेई ने कहा। “दोबारा काम पर लग जाओ।”

और शिरोहा सफ़ाई करता रहा। जब उसने सफ़ाई पूरी कर ली तब सेन्सेई ने उसे रसोईघर में जाकर दोपहर का भोजन पकाने के लिए कहा। जब शिरोहा ने खाना पका लिया तो सेन्सेई ने उसे अपने घर के आस-पास के बागीचे की देखभाल करने के लिए कहा।

समय-समय पर जब भी शिरोहा को इस बात का सबसे कम अन्देशा होता — *खचाक!* सेन्सेई पीछे से लकड़ी की तलवार के साथ दबेपाँव आ जाते। बार-बार ऐसा होता रहा, जब तक कि दिन समाप्त होते-होते, शिरोहा अपने आप को बुरी तरह से परेशान महसूस करने लगा और उसके सब्र का बाँध अब टूटने ही वाला था।

शाम को जब शिरोहा जाने के लिए तैयार हो रहा था तब सेन्सेई ने कहा, “तो, शिरोहा . . . क्या तुम कल वापस आओगे?”

शिरोहा ठहरा।

“जी, सेन्सेई,” उसने धीमे-से कहा।

***

कई महीनों तक शिरोहा, सेन्सेई के लिए काम करता रहा; वह सभी तरह के काम करता। इस बीच उसे एक-बार भी केन्डो के अभ्यास सत्रों में भाग लेने का अवसर नहीं मिला; उसे एक बार भी तलवार चलाने का मौका नहीं मिला। वह अकसर सेन्सेई से अपने प्रशिक्षण के बारे में बात करता। वह हिचकिचाते हुए कहता, "कृपया. . . सेन्सेई, क्या मैं आज तलवारबाज़ी सीख सकता हूँ?"

और हर बार सेन्सेई कहते, "धीरज रखो, शिरोहा। तुम्हें जो सीखना चाहिए वह तुम सीख रहे हो।"

इस पूरे समय के दौरान सेन्सेई अचानक-ही अपनी लकड़ी की तलवार के साथ वहाँ पहुँच जाया करते। *खचाक* — जब शिरोहा सब्ज़ी काट रहा होता। *खचाक* — जब शिरोहा ज़मीन पर पोछा लगा रहा होता। *खचाक, खचाक, खचाक* — जब शिरोहा पौधों की कटाई-छटाई कर रहा होता।

लेकिन समय के साथ एक मज़े की बात हुई। शिरोहा एकाग्रता के साथ अपना काम कर रहा होता था; उसका ध्यान पूरी तरह से अपने काम पर होता था। परन्तु उसके *शरीर* ने सुनना शुरू कर दिया था। ऐसा लग रहा था मानो उसकी जागरूकता विस्तृत और व्यापक हो रही हो; उसकी जागरूकता को एक नया रूपाकार मिल गया हो — या शायद यह रूपाकार हमेशा से ही था और अब वह बस उसे खोज पा रहा था। वह तलवार के हवा में चलने की हल्की-सी सांय की आवाज़ को भी सुन लेता; और इससे पहले कि तलवार उस तक पहुँचे, उसे सहज ही पता चल जाता कि क्या करना चाहिए। उसे पता होता कि कहाँ जाना चाहिए। यह एक नृत्य जैसा हो गया; तलवार उस पर वार करती, वह धीरे-से एक ओर सरक जाता। तलवार से उस पर वार होता और इस वार को रोकने के लिए उसका हाथ स्वतः ही उठ जाता।

एक दिन शिरोहा बाहर बगीचे में था। यह जगह बहुत सुन्दर थी — पेड़ों पर पत्तियाँ सुर्ख़ लाल रंग की नज़र आ रही थीं, माउन्ट फूजी की चोटी सूरज की रौशनी में चमक रही थी।

सांय।

शिरोहा इस आवाज़ को पहचानता था। और जब उसके कान इसे ध्यान से सुनने लगे तब बाकी सब कुछ शान्त हो गया। सब कुछ धीमा हो गया; समय रुक-सा गया। उसे अपने दिल की धड़कन सुनाई देने लगी, अपने फेफड़ों में बहती हवा की आवाज़ सुनाई देने लगी — और एक प्रवाह में वह किनारे की ओर घूम गया। उसने सेन्सेई की आगे बढ़ी हुई बाजू को पकड़ा और तलवार के हत्थे को सेन्सेई के हाथ से खिसकाकर अपने हाथ में ले लिया।

“ओह!” शिरोहा ने कहा। समय फिर अपनी गति से चलने लगा, और उसने तलवार को पहली बार अच्छी तरह से देखा। उसे अपने हाथों में उसका वज़न महसूस हुआ। “सेन्सेई, यह तो *असली* तलवार है।”

“हाँ,” सेन्सेई ने कहा।

“सेन्सेई, मुझे समझ नहीं आ रहा,” शिरोहा ने कहा।

“मुझे तुम पर गर्व है, शिरोहा,” सेन्सेई ने उत्तर दिया। “देखो, केन्डो के बारे में तुन्हारी समझ कितनी बढ़ गई है।”

“क्या मतलब है आपका?” शिरोहा ने पूछा। “मैंने तो अपना अभ्यास शुरू भी नहीं किया।”

“तुम्हें क्या लगता है, तुम क्या कर रहे थे, शिरोहा, उन सभी अवसरों पर जब तुमनें मेरी तलवार के वार का सामना किया?”

शिरोहा ने एक क्षण के लिए विचार किया।

“मुझे लगता है . . . मैं वही कर रहा था जो मेरे अन्दर से आ रहा था।”

शिरोहा ने सेन्सेई की ओर देखा; उनके चहरे पर एक चमक थी।

“हाँ,” सेन्सेई ने कहा। “हाँ, बिल्कुल। तुमने वही किया जो तुम्हारे अन्दर से उभरा। अब तुम मेरी कक्षा में आ सकते हो।”

© २०१९ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।